अनाया व्याकरण

Teacher Manual
Class-6-8

Future Print

अनाया व्याकरण-6

1. हिन्दी भाषाः उद्‌भव एवं विकास

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब)

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. किसी भी राष्ट्र की अपनी भाषा को .... रूप में हिन्दी ने अपनी पहचान बनाई है। 2. देश के शासन की भाषा को राजभाषा कहा जाता है। .... भारत की राजभाषा घोषित किया गया। 3. सम्पर्क भाषा वह भाषा होती है जिसके माध्यम से .... सम्पर्क भाषा के रूप में काम कर रही है।

(घ) 1. भाषा विचार-विनिमय का माध्यम होती है। 2. संस्कृत से 3. संस्कृत से हिन्दी भाषा की यात्रा को अधिकांश भाषा वैज्ञानिक इस रूप में बताते हैं: वैदिक संस्कृत- लौकिक संस्कृत, पालि भाषा, प्राकृत भाषा, अपभ्रंश भाषा, हिन्दी भाषा। यानी वैदिक संस्कृत से भाषा ने अपनी यात्रा को विभिन्न पड़ावों से गुजरते हुए हिन्दी तक पहुँचाया। 4. इसका सम्बन्ध समाज यानी व्यक्तियों के समुदाय से होता है। इसलिए भाषा को सामाजिक सम्पत्ति भी कहा जाता है। 5. भाषा निरन्तर गतिशील प्रक्रिया है अर्थात् भाषा निरन्तर .... से आसानी की ओर होती दिखाई देती है। 6. भाषा और बोली का अटूट सम्बन्ध है। भाषा का .... का क्षेत्र सीमित होता है तथा भाषा का विस्तृत। 7. हिन्दी, बंगला, मराठी, उड़िया, पंजाबी, ... शब्दावलियाँ आपस में मिलती -जुलती हैं।

2. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स)

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✗

(ग) भाषा के प्रमुख अंग 1. वर्ण 2. शब्द 3. वाक्य; **व्याकरण के प्रमुख अंग** 1. संज्ञा 2. सर्वनाम 3. विशेषण 4. क्रिया 5. अव्यय

(घ) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर अथवा लिखकर अपने भावों और विचारों का अपास में आदान-प्रदान करता है। 2. मौखिक भाषा, लिखित भाषा, सांकेतिक भाषा 3. इसकी कोई लिपि नहीं होती। 4. व्याकरण वह शास्त्र अथवा नियम है, ... लिखना, बोलना और समझना सीखते हैं। 5. किसी भी भाषा के साथ व्याकरण का एक .... शुद्ध और मानक रूप नहीं बन सकता। 6. वर्ण विचार में वर्णों के स्वरूप-भेद, प्रकार आदि के बारे में विचार किया जाता है। शब्द विचार में शब्दों के स्वरूप-भेद, प्रकार, लिंग, वचन आदि के बारे में विचार किया जाता है। 7. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय।

3. वर्ण-विचार

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब)

(ख) 1. शब्द 2. वर्णमाला 3. ह्रस्व 4. ह्

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

(घ) स्वयं कीजिए। **(ङ)** स्वयं कीजिए।

(च) 1. भाषा की वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और खंड या टुकड़ नहीं हो सकते, वर्ण कहलाते हैं। 2. स्वर वर्णों का उच्चारण किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना किया जाता है, वे स्वर कहलाते है। व्यंजन स्वर वर्णों की सहायता से प्रयोग किए जाते हैं। 3. स्वर तीन प्रकार के होते हैं- ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर, प्लुत स्वर (1) **ह्रस्व स्वर**- जिन स्वरों के उच्चारण . ... ये चार होते हैं- अ, इ, उ तथा ऋ। (2) **दीर्घ स्वर**- जिन स्वरों के उच्चारण में .... ये सात होते हैं- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ। (3) प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना .... रा३म, जा३ओ, ओ३म आदि। 4. जिन व्यंजनों का उच्चारण कंठ, होंठ .... वर्ग तक सभी 'स्पर्श' व्यंजन हैं। 5. **अल्पप्राण व्यंजन**- जिन व्यंजनों के उच्चारण में .... वे अल्पप्राण व्यंजन होते है। **महाप्राण व्यंजन**- जिन व्यंजनों के उच्चारण में .... वे महाप्राण व्यंजन कहलाते है।

4. शब्द-विचार

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ)

(ख) तत्सम- विद्यालय, रात्रि, शुभ, दिवस, सूर्य, प्रातः, **तद्भव**- चाँद, रात, भोर, सांझ, **देशज**- खेत, खलिहान, मजूरी, खटिया, लोटा

(ग) उपस्थिति, वेतन, दयालु, व्यवस्था, पूरी, प्रशंसा

(घ) हाथ, टेक्स; हरा, परास्त; एक दिशा, एक द्रव्य; एक दिशा, जवाब

(ङ) 1. वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. उत्पत्ति के आधार पर, रचना के आधार पर, प्रयोग के आधार पर, अर्थ के आधार पर। 3. वे शब्द जिनके दो या उससे अधिक अलग -अलग अर्थ निकलें उन्हें अनेकार्थी शब्द कहा जाता है। 4. उत्पत्ति के आधार पर इन्हें चार भागों में बाँट सकते है: तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द, विदेशी शब्द 5. किसी शब्द के विपरीत अर्थ रखने वाले शब्द को विलोमार्थी शब्द कहते है। 6. रचना के आधार पर शब्दों को तीन भागों में बाँटा गया है: रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द, योगरूढ़ शब्द। 7. प्रयोग के आधार पर शब्दों को मूलतः तीन भागों में बाँटते हैं: सामान्य शब्द, तकनीकी शब्द, अर्धतकनीकी शब्द। 8. वे शब्द जो तकनीकी होने पर भी आम .... कुछ दूसरे अर्थों में प्रयोग करती है। 9. अभी आपने उन शब्दों के विभिन्न प्रकार पढ़े जो .... जिनका निर्माण विभिन्न आधारों पर हुआ है। 10. हिन्दी भाषा में तमाम ऐसे शब्द हैं जो अंग्रेजी, अरबी, एवं फारसी भाषाओं में आये हैं।

5. संधि

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ)

(ख) 1. मेल 2. संधिविच्छेद 3. वृद्धि संधि 4. य्, व्, र्

(ग) दया + आनंद, क्रम + अनुसार, न्याय + आलय, सत् + ईश, परम + ईश्वर, एक + एक, इति + आदि, सु + आगत, ने + अक, पौ + अन

(घ) रमेश, महोदय, सदैव, देवर्षि, रवीन्द्र, राजर्षि

6. पद-विचार

(क) 1. स्वतंत्र शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त हो जाते है तो उन्हें पद कहा जाता है। 2. वाक्य में प्रयोग होने से पूर्व जिन्हें शब्द कहा जाता है वे ...

...... आने पर नियमों से बँध जाते हैं। 3. दो 4. पाँच 5. वाक्य में प्रयुक्त होने पर वाक्य के नियमानुसार (लिंग, वचन कारक) जो पद विकार ग्रहण करते हैं अथवा जिनमें बदलवा आता है, वे विकारी पद कहलाते हैं। 6. चार

7. संज्ञा

(क) 1. बगीचे, सुन्दरता 2. प्रेमचन्द, गोदान उपन्यास 3. बुढ़ापे, परेशानी 4. हिमालय, भारत

(ख) मित्रता, लिखावट– भाववाचक; गुलाब, नदी– जातिवाचक; चाँदी– द्रव्यवाचक; सेना– समूहवाचक

(ग) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव का बोध (ज्ञान) कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते है। 2. पाँच 3. जिन शब्दों के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु, एवं स्थान के नाम का बोध .... **स्थान का नाम**– दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, मुम्बई, आगरा। 4. वे शब्द जो किसी भाव, गुण, दशा एवं .... करने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं। 5. वे शब्द जिनसे किसी समूह का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

8. लिंग

(क) 1. बाजार 2. पुस्तक 3. बसन्त ऋतु 4. आँख 5. ऑफिस

(ख) **पुल्लिंग**– फूल, पहाड़, अक्टूबर, सावन, मोर, ट्रक, बस, शहर, स्कूल, गाँव; **स्त्रीलिंग**– गंगा, कली, सेना, जनता, सड़क, बाजार, दुकान

(ग) छात्रा, वीरांगना, साम्राज्ञी, देव, कवयित्री, बालिका, भगवती, सुनार, मोर

(घ) 1. हिन्दी भाषा में लिंग निर्धारण बड़ा ही कठिन है क्योंकि .... आदि को पुल्लिंग कहा जाय अथवा स्त्रीलिंग। 2. दो 3. हिन्दी भाषा में कुछ ऐसे शब्द है जो पदवाची हैं और उनका प्रयोग .... प्रिंसिपल, क्लर्क, लिपिक आदि। 4. कुछ ऐसे पशु–पक्षियों के नाम होते है जिनके पुल्लिंग और स्त्रीलिंग .... नर कौआ, मादा कौआ। 5. स्त्रीलिंग

9. वचन

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ)

(ख) 1. पत्ते 2. चिड़ियाँ 3. कहानियाँ 4. तितलियाँ 5. फूलों

(ग) 1. एकवचन 2. एकवचन 3. बहुवचन 4. एकवचन 5. बहुवचन

(घ) 1. शब्दों के जिस रूप से व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा प्राणियों के एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते है। 2. दो 3. **एकवचन**– शब्दों के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु .... माला, पत्ता, चूहा आदि। **बहुवचन**– शब्दों के जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा .... चूहे, सड़कें, मालाएँ आदि। 4. प्राण, होश, लोग 5. सेना, हवा, सूरज

10. कारक

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स)

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. में 2. को 3. के लिए 4. में 5. ने

(घ) 1. करण 2. अपादान 3. कर्म 4. कर्म

(ङ) 1. कारक वे व्याकरणिक इकाई है जो वाक्य में संज्ञा और सर्वनाम पदों का सम्बन्ध क्रिया के साथ बतलाते हैं। 2. आठ 3. करण कार: वह साधन जिसके द्वारा क्रिया हो रही है। अपादान कारक: अलग होने का भाव। 4. परसर्ग 5. संस्कृत में विभक्ति के अन्तर्गत कारक आते

थे .... को, के लिए, में, पर आदि।

11. सर्वनाम

(क) 1. (स) 2. (ब)

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✗

(ग) कोई-अनिश्चयवाचक; जिसका, जो, जिस- संबंधवाचक; वह, तुम, यह, मैं- पुरूषवाचक; क्यों, कहाँ, कौन-प्रश्नवाचक; स्वयं, अपना- निजवाचक

(घ) निश्चयवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों से किसी निश्चित वस्तु का बोध कराया जाता है, वे सारे शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **अनिश्चयवाचक सर्वनाम-** जिन शब्दों से कोई निश्चित वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान का बोध नहीं होता, वे सारे शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(ङ) 1. जो शब्द संज्ञा के बदले अथवा संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। 2. छः 3. ऐसे शब्द जो कहने वाले, सुनने वाले एवं जिसके बारे में कहा जाता है, के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम सामान्यतः मानव जाति के लिए प्रयोग किए जाते हैं। 4. तीन 5. जिन शब्दों का प्रयोग हम स्वयं के लिए करते हैं अथवा जिन शब्दों के द्वारा निजता का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

12. विशेषण

(क) गुणवाचक- बहादुर, सफेद, ईमानदार, बहुत, मजबूत बच्चा; **परिमाणवाचक-** थोड़ा, कुछ, अधिक; **संख्यावाचक-** आठवीं, छठवीं, दस, बीस

(ख) विशेषण- मीठा, काला, स्वस्थ, चाँदनी; **विशेष्य-** आम, घोड़ा, बालक, रात

(ग) 1. संज्ञा और सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। 2. चार 3. **विशेषण-** जिन शब्दों से विशेषता बतलाई जाती है, वे सारे शब्द विशेषण होते हैं। विशेष्य- जिन शब्दों (संज्ञा और सर्वनाम) की विशेषता बताई जाती है, उन शब्दों को विशेष्य कहा जाता है। इस श्रेणी में संज्ञा और सर्वनाम शब्द आते हैं। 4. वे शब्द जो संज्ञा और सर्वनाम के गुण-दोष अथवा किसी अन्य विशेषता को प्रकट करते हों उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे- सुन्दर, अच्छा, कमजोर, बीमार, तेज, छोटा, बड़ा, मोटा, पतला, शहरी, देहाती, गोरा, काला आदि। 5. वे शब्द जो किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम के परिमाण (मात्रा) अथवा नाप-तौल को प्रकट करते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जिन शब्दों द्वारा संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। 6. जो शब्द किसी संज्ञा की ओर संकेत करता है अथवा कोई सर्वनाम शब्द विशेषण के रूप में प्रकट होता है तो उसे सार्वनामिक विशेषण अथवा संकेवाचक विशेषण कहते हैं। यह कमल लो।, वह आम खरीदो। वे घर मिट्टी के हैं। यह पुस्तक बाजार में नहीं है। वह फल खराब है।

13. क्रिया

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) रंग-रंगना, चमक-चकमाना, साठ-सठियाना, चिकना- चिकनाना, महक-महकाना, बात-बतियाना

(ग) पढ़, लिख, हँस, रो, जाग

(घ) 1. जिस शब्द या पद से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है। 2. दो 3. क्रिया के साथ जहाँ कर्म का प्रयोग नहीं होता, वह क्रिया अकर्मक होती है। 4. चार 5. संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण पदों में कुछ प्रत्यय लगाकर जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रिया कहते है। 6. जिस वाक्य में मुख्य क्रिया से पूर्व कोई क्रिया सम्पन्न हुई हो उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। इस क्रिया में कर लगा होता है। 7. क्रिया शब्दों के मूल रूप को धातु कहा जाता है।

(ङ) 1. वह खाकर सो गया। 2. वह नहाकर पूजा कर रहा है।

(च) 1. सकर्मक 2. सकर्मक 3. अकर्मक 4. सकर्मक 5. अकर्मक

14. काल

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ)

(ख) 1. भूतकाल 2. तीन 3. है या हैं 4. भविष्यत्

(ग) 1. सोहन गा रहा है, सोहन गाएगा। 2. शिल्पा पुस्तक पढ़ती है। शिल्पा पुस्तक पढ़ेगी। 3. मैं पत्र लिखता हूँ। मैं पत्र लिखूँगा। 4. वर्षा हो रही है। वर्षा होगी।

(घ) 1. भविष्यत्, संभाव्य 2. भूत, संदिग्ध 3. भूत, पूर्ण 4. भूत, पूर्ण 5. भूत, आसन्न भूत

15. वाच्य

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ)

(ख) 1. मुझसे सहा गया। 2. गधा द्वारा बोझ ढोया गया। 3. सौरभ द्वारा पुस्तक पढ़ी गई। 4. मीना द्वारा मधुर गाना गाया गया। 5. सोनू द्वारा फल खाया गया।

(ग) 1. विद्यार्थी से पढ़ा जाता है। 2. छोटी लड़की से सोया जाता है। 3. लड़कियों से गाया जाता है। 4. पक्षियों से उड़ा जाता है। 5. बालिकाओं से हँसा जाता है।

(घ) 1. वाच्य क्रिया के उस रूपांतर को कहते हैं, जिससे यह जाना जाता है कि क्रिया में कर्त्ता की प्रधानता है, कर्म की अथवा भाव की। 2. तीन 3. **कर्तृ वाच्य–** जिस वाक्य में कर्त्ता की प्रधानता हो अर्थात् स्वयं कार्य करता हो तथा क्रिया कर्त्ता के लिंग व वचन के अनुसार प्रयोग की जाती हो, उसे कर्तृ वाच्य कहते है। **कर्म वाच्य–** जिस वाक्य में 'कर्म' प्रधान होता है तथा क्रिया 'कर्म' के लिंग व वचन के अनुसार प्रयोग की जाती है, वह कर्म वाच्य कहलाता है। 4. जिन वाक्यों में 'भाव' प्रधान होता है तथा कर्म का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, वे भाव वाच्य कहलाते है।

16. अव्यय पद

(क) 1. की ओर 2. से 3. अरे! 4. ताकि 5. स्वयं

(ख) 1. जो व्यय न हो अथवा खर्च न हो, ... नहीं होने के कारण इन शब्दों को अव्यय कहा जाता है। 2. अविकारी से आशय जो विकार ग्रहण नहीं करें। उदाहरण– सामने, आगे–पीछे, ऊपर, नीचे और किन्तु, परन्तु आदि। 3. चार 4. निपात वे शब्द होते हैं जिनका वाक्य में प्रयोग किसी विशेष बात पर बल .... निपात भी अव्यय होते है। 5. वे पद जो वाक्य में संज्ञा अथवा सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे हिस्से से जोड़ते हैं, उन्हें सम्बन्धबोधक अव्यय

कहा जाता है। वे पद जो दो वाक्य को जोड़ते हैं उन्हें योजक तथा समुच्चयबोधक अव्यय कहा जाता है। 6. चार

17. उपसर्ग एवं प्रत्यय

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स)

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. भारतीय 2. लिखावट 3. ईमानदारी 4. कीमती

(घ) बदनसीब, अनमोल, सुपुत्र, प्रदान, आवास, लाइलाज

(ङ) मूल शब्द– सप्राह, मगर, बल, चमक; **प्रत्यय**– इक, ईय, पूर्वक, ईला

(च) 1. जो शब्दांश किसी शब्द के आरंभ में लगकर उसके (शब्द के) अर्थ को प्रभावित करते है, उन्हें उपसर्ग कहते है; जैसे- अ, अप, प्र, अनु, खुश, अभि आदि। 2. कुछ शब्दांश ऐसे होते हैं, जिनका प्रयोग शब्दों के पीछे किया जाता है, इन्हें प्रत्यय कहा जाता है। 3. प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं- कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय। 4. जो प्रत्यय क्रिया की धातु के साथ जुड़ते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। 5. जो प्रत्यय क्रिया से भिन्न शब्दों जैसे संज्ञा, विशेषण आदि के अंत में जोड़े जाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

18. समास

(क) 1. (अ) 2. (अ) 3. (स)

(ख) 1. (ii) 2. (iv) 3. (i) 4. (v) 5. (iii)

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(घ) 1. चंद्र के समान मुख, कर्मधारय 2. रात और दिन, द्वंद्व 3. चार भुजाओं का समाहार, द्विगु 4. नौ ग्रहों का समूह, द्विगु 5. घोड़े पर सवार, तत्पुरूष 6. प्रत्येक क्षण, अव्ययीभाव

(ङ) 1. दो या दो से अधिक पदों से मिलकर बने स्वतंत्र एवं सार्थक पद को समास कहते हैं। 2. समस्त पद को अलग करने की प्रक्रिया को समास-विग्रह कहते है। 3. समास द्वारा अनेक शब्दों को संक्षिप्त करके जो नया बनता है, उसे समस्त पद कहते हैं। 4. जिस समस्त पद का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद संख्यावाची हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। 5. जिस समस्त पद का उत्तर पद प्रधान हो तथा पूर्व पद एवं उत्तर पद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध हो, उसे **कर्मधारय समास** कहते हैं। वह समास जिसके समस्त पदों में कोई भी पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद होता है, उसे **बहुब्रीहि समास** कहते है।

19. पर्यायवाची शब्द

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) बादल– अम्बुद, नीरद, तोमर, जलद, वारिद; **समुद्र**– अम्बूधि, नीरधि, तायधि, जलधि, वारिध

(ग) स्वयं कीजिए। **(घ)** स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. एक शब्द के कई समानार्थी शब्द होते है जिन्हें आपस में एक दूसरे के पर्याय कहा जाता है इन्हीं पर्याय के कारण इन्हें पयार्यवाची शब्द कहा गया है। 2. भाषा में सुंदरता एवं पूर्णता आती है।

19. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) 1. (स) 2. (अ)

(ख) 1. जहाँ जाना कठिन हो 2. जिसका कोई शत्रु न हो 3. ईश्वर में विश्वास रखने वाला 4. बुरे कार्य में प्रसिद्ध 5. जिसका विवाह न हुआ हो

(ग) 1. निष्पक्ष 2. दुष्प्राप्य 3. अक्षर 4. अपरिमित 5. अवर्णनीय

(घ) 1. लोहार 2. सुनार 3. किसान 4. श्रमिक 5. नाविक

(ङ) 1. संक्षिप्त और सारगर्भित लेखन महत्वपूर्ण हीं नहीं उपयोगी भी होता है। सटीक बात संक्षेप में ही कही जा सकती है। शब्दों का अनावश्यक उपयोग भ्रम पैदा करता है। 2. संक्षेप में लेखन के लिए समास शैली का उपयोग किया जाता है। 3. थोड़े में लेकिन प्रभावशाली .. .. संक्षिप्त लिखना या बोलना दोनों उत्तम माना गया है।

21. अनेकार्थी शब्द

(क) 1. स्वयं कीजिए।

(ख) विधि- ब्रह्मा, तरीका; कल- कारखाना, दिन (बीता हुआ, आने वाला); अंक- गोद, संख्या उत्तर- जवाब, एक दिशा; कर- हाथ, टैक्स; वर्ण- अक्षर, जाति

(ग) स्वयं कीजिए। **(घ)** स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. वे शब्द जिनके कई अलग-अलग अर्थ निकलते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहा जाता है। 2. एक ही शब्द के अलग-अलग अर्थ प्राय: प्रसंग, परिस्थिति तथा प्रयोग की भिन्नता के कारण निकलते है। 3. भाषा में संक्षिप्ता एवं सुंदरता आती है।

22. समश्रुत भिन्नार्थक शब्द

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) सूत, ग्रह, क्रांति, वश, अली, अनिल, अवधी, चीर

(ग) स्वयं कीजिए। **(घ)** स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. वे शब्द जो सुनने में लगभग समान लगे लेकिन उनके अर्थ में अन्तर हो ऐसे शब्दों को समश्रुत भिन्नार्थक अथवा समरूपी भिन्नार्थक शब्द कहते है। 2. सुनने में एक समान 3. एक समान उच्चरित होने के कारण 4. भाषा भंडार में वृद्धि एवं सुंदरता रहती है।

23. मुहावरे

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. कमर कसना 2. उल्टी गंगा बहाना 3. अक्ल का दुश्मन 4. अंगूठा दिखाना 5. आग में घी डालना

(ग) चुगली करना, गुस्सा होना, धोखा देना, अपना काम निकालना, क्रोध को बरदाश्त करना, दूसरों की सुनना

(घ) स्वयं कीजिए। **(ङ)** स्वयं कीजिए।

(च) 1. जब कोई वाक्यांश या शब्द समूह ...... शब्द समूह को मुहावरा कहते है। 2. मुहावरा सामान्यत: कुछ ऐसे वाक्यांश या .... मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। 3. गद्य के क्षेत्र में 4. किसी विशेष अर्थ के लिए होने पर।

24. लोकोक्तियाँ

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (अ)

(ख) 1. घर की मुर्गी दाल बराबर 2. अधजल गगरी छलकत जाय 3. खोदा पहाड़ निकली चुहिया 4. सीधी गाय का मुँह कुत्ता चाटे 5. एक अनार सौ बीमार

(ग) स्वयं कीजिए। **(घ)** स्वयं कीजिए।

(ङ) मुहावरा एवं लोकोक्ति दोनों का प्रयोग लोग .... में प्रयोग करने के बाद निकलता है; जैसे- एक अनार सौ बीमार, नौ नगद न तेरह उधार।

(च) 1. लोकोक्ति से आशय लोग अथवा ग्रामीण परिवेश में प्रचलित .... या सत्य को प्रकट करते हैं। 2. इसका उद्भव ग्रामीण परिवेश में आम जनता के बीच में होता है। 3. ग्रामीण परिदेश में 4. यह अपने आप में अर्थ पूर्ण होती है।

25. वाक्य-विचार

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

(ख) 1. सीता पढ़ रही होगी। 2. क्या वह घर जा रहा है? 3. रमेश पत्र नहीं लिखता है। 4. क्या! विजय दौड़ में प्रथम आया। 5. अब पुस्तक पढ़ो।

(ग) 1. मिश्र 2. संयुक्त 3. संयुक्त 4. मिश्र

(घ) दशरथ; अयोध्या के राजा; मर्यादा पुरूषोत्तम थे; के पुत्र राम

(ङ) 1. पदों (शब्दों) का सार्थक और सही क्रम जिससे निश्चित अर्थ प्रकट होता है उसे वाक्य कहते है। 2. वाक्य के दो अंग होते है- उद्देश्य, विधेय 3. आठ 4. तीन 5. ऐसे वाक्य जिनसे हर्ष, शोक, घृणा, उत्साह अथवा आश्चर्य का बोध होता है उन्हें विस्मयवाचक वाक्य कहते है। 6. संकेतवाचक वाक्यों को शर्त्तवाचक वाक्य भी कहा जाता है। क्योंकि इन वाक्यों में कोई न कोई शर्त लगी रहती है। 7. जिन वाक्यों में एक से अधिक उपवाक्य होते है। जिनमें एक प्रधान उपवाक्य होता है शेष उस पर आश्रित उपवाक्य होते है। ऐसे वाक्यों को मिश्र वाक्य कहते हैं। 8. जिन वाक्यों में क्रिया के करने अथवा होने का सामान्य कथन या उल्लेख हो ऐसे वाक्यों को विधानवाचक वाक्य अथवा सरल वाक्य कहते है।

26. विराम-चिह्न

(क) 1. कल तुम विद्यालय क्यों नहीं आये थे? 2. शिक्षक ने कहा- " कल विद्यालय बन्द रहेगा।" 3. अरे! आप इतने दिन कहाँ थे? 4. बाजार से मैंने मटर, टमाटर, गोभी और मिर्च खरीदे। 5. वह रात-दिन जोड़-जोड़ कर पैसा इकट्ठा करता है।

(ख) 1. लिखित भाषा में वर्ण, मात्रा .... को हम विराम चिह्न कहते है। 2. वाक्य के पूरा होने पर थोड़ा समय रुकने के लिए .... इसें खड़ी पाई भी कहते है। 3. जहाँ सबसे कम समय के लिए रुकना पड़ता है वहाँ .... समान पदों के बीच होता है। जैसे दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता। जहाँ अल्पविराम से कुछ अधिक तथा पूर्ण विराम से कुछ .... अर्धविराम चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे युवा असन्तोष; कारण और निदार। 4. जिन वाक्यों में विस्मय, घृणा, हर्ष .... विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। 5. जिन वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द लगाया जाता है। .... का प्रयोग किया जाता है।

27. पत्र-लेखन

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. दो 2. औपचारिक पत्र भी कई प्रकार के होते हैं; जैसे- सरकारी, पत्र, व्यवसायिक पत्र, ... संस्था प्रमुख को पत्र आदि। 3. स्वयं कीजिए। 4. स्वयं कीजिए।

28. संवाद-लेखन

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. दो या दो से अधिक लोगों के बीच होने .... 'संवाद-लेखन' कहलाता है। 2.

गद्य साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा .... के रूप में ही होता है। 3. नाटक के अलावा कहानी, एकांकी और .... रोचक एवं प्रभावशाली बना देते हैं। 4. संवाद यथासंभव छोटे-छोट एवं भावपूर्ण होने चाहिए।, संवादों की भाषा .... विराम चिह्नों का सही प्रयोग होना चाहिए। 5. संवाद-लेखन भी एक कला है। .... बड़ी ही सावधानी से लिखा जाता है। 6. वर्तमान समय में टी.वी पर आने वाले सभी .... शैलीगत अन्तर होता है।

29. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

स्वयं कीजिए।

30. निबंध-लेखन

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. किसी भी विष पर अपने विचारों को . ... विधा 'निबन्ध' कहलाती है। 2. पाँच 3. 4. 'निबंध' गद्य की सबसे सशक्त विधा है। निबन्ध .... विचारों को व्यापक रूप से व्यक्त करते है। 5. नवीनतम निबंध को 6. निबन्ध का अन्तिम अंग उपसंहार होता है। यहाँ . ... अंश सारांश के रूप में पढ़ा जाता है।

31. कहानी-लेखन

स्वयं कीजिए।

अनाया व्याकरण-7

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (स)

(ख) 1. मौखिक 2. संस्कृत 3. लिखित 4. व्याकरण 5. देवनागरी

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. भावों एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए निश्चित शर्तों .... विचारों के विनिमय का एक माध्यम है। 2. मौखिक भाषा की ध्वनियों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए . ... प्रतीकों को 'लिपि' कहा जाता है। 3. स्वयं कीजिए 4. किसी भी भाषा के लिए व्याकरण का .... लिखना, बोलना एवं समझना। 5. हिन्दी भाषा विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक .... सम्पूर्ण भारत में समझी जाती है। 6. दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, ... प्रान्तों की यह मातृभाषा है। 7. ''परस्पर सम्बन्ध रखने वाली भाषाएँ .... 'भाषा-परिवार' कहते हैं।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (ब)

(ख) 1. वर्ण 2. ग्यारह 3. नाक 4. 27

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ 2. स् + अ + र् + अ् + क् + अ + स् + अ 3. ग् + अ + म् + अ + ल् + आ 4. ह् + इ + र् + अ + न् + अ

(ङ) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(च) 1. **ह्रस्व स्वर-** जिन वर्णों के उच्चारण में .... इ, उ, ऋ, ह्रस्व स्वर है। दीर्घ स्वर- जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर .... ऐ, ओ, औ, ये दीर्घ स्वर है। **प्लुत स्वर-** जिन स्वरों के उच्चारण में लगभग तीन गुना समय .... अंकित कर देते है; जैसे 'ओ३म्'। 2. **अनुस्वार (अं)- अनुस्वार** का उच्चारण नाक से किया जाता .... लगाकर किया जाता है। **अनुनासिक (अः)-** विसर्ग का उच्चारण 'ह' की .... जैसे- प्रातः प्रायः आदि। 3. 'र'

व्यंजन के साथ 'उ' व 'ऊ' की मात्रा 'र' के नीचे नहीं बल्कि .... र + ू = रूप, रूमाल 4. दो व्यजनों के मेल से बने .... क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ = ज्ञ, श् + र = श्र

3. शब्द-विचार

(क) लाल- एक मणि, पुत्र; पानी- लाज, जल; हार- माला, पराजय; कल- कारखाना, आनेवाला दिन; उत्तर- जवाब, एक दिशा

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) परदेश, यश, उन्नति, चेतन, अप्रत्यक्ष

(घ) इच्छा-निश्चित, धागा-पुत्र, सबुत-मात्रा, भगवान पर चढ़ाने वाली साम्रगी-महल

(ङ) स्वयं कीजिए।

(च) 1. समानार्थी शब्द से आशय समान अर्थ रखने वाले शब्दों से है .... दूसरा शब्द नहीं होता। 2. उलटे अर्थ रखने वाले शब्दों को विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहा जाता है। 3. हिन्दी में ऐसे अनेक शब्द है जो सुनने में अथवा उच्चारण .... भिन्नार्थक शब्द कहा जाता है। 4. हिन्दी में ऐसे अनेक शब्द है जो कई अलग-अलग .... अनेकार्थी शब्द कहा जाता है। 5. समानार्थी शब्द से आशय समान अर्थ रखने वाले शब्दों से है .... दूसरा शब्द नहीं होता। हिन्दी में ऐसे अनेक शब्द है जो कई अलग-अलग .... अनेकार्थी शब्द कहा जाता है।

4. पद-विचार

(क) 1. रहते हो; अरे, रमेश, आजकल, कहाँ 2. आई है। सीता, अभी-अभी तो

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. 'स्वतंत्र शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त हो जाता है तो वह पद कहलाता है।' 2. वाक्य में प्रयुक्त प्रदों का पूर्ण व्याकरणिक परिचय पद-परिचय कहलाता है। 3. वाक्य से अलग शब्द स्वतंत्र शब्द तथा नियमबद्ध वाक्य के शब्द पद कहलाते है। 4. कुछ पद ऐसे भी हैं जो वाक्य के नियमों से बँधे होने पर .... विकारी पद कहा जाता है। 5. संज्ञा पदों का परिचय देते समय उसके भेदों का नाम लिखा जाता है? .... संज्ञा पद का वाक्य की क्रिया से क्या सम्बन्ध है? 6. अव्यय पदों का परिचय देते समय उनके भेदों का नाम लिखना आवश्यक है। चूँकि अव्यय पद .... इनका उल्लेख नहीं होता।

5. संधि

(क) सूर्योदय, पावक, स्वागत, यद्यपि, विद्यालय, संयोग

(ख) सत् + जन, सत् + गति, सं + मार्ग, सु + आगत, देव + इन्द्र, दिक् + अम्बर, रमा + ईश

(ग) नि + मल, सं + कल्प, अद्य: + गति, पुस्तक + आलय, जगत + ईश, सूर्य + उदय

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है उसे सन्धि कहते हैं। 2. मुख्य रूप से सन्धि के तीन प्रकार है: स्वर सन्धि, व्यंजन संधि, विसर्ग संन्धि 3. व्यंजन वर्णों के साथ व्यंजन अथवा स्वर वर्ण मिलने पर जो विकार .... हम व्यंजन सन्धि कहते हैं 4. जहाँ स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मिलने पर जो .... उसे स्वर सन्धि कहा जाता है। 5. जहाँ विसर्ग (:) के बाद उससे कई व्यंजन .... अन्य वर्ण बन जाता है।

6. संज्ञा

(क) जातिवाचक– पहाड़; **व्यक्तिवाचक**– माउण्ट एवरेस्ट, चेन्नई; **भाववाचक**– गरीबी, हार; **समूहवाचक**– कक्षा, सभा; **द्रव्यवाचक**– तेल, चीनी

(ख) उड़ना, मीठा, नेता, अपना, शिष्य, काटना, निज, गरीब, बूढ़ा, चढ़ना

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) मित्रता, दोस्ती, नेतागिरी, विजय, बहादुरी, उड़ान, दौड़

(ङ) 1. किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान का बोध .... वाराणसी, पहाड़, पक्षी आदि। 2. पाँच 3. जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष .... रामचरितमानस, रामायण आदि। 4. जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण .... बुढ़ापा, बचपन आदि। 5. जब कोई भी व्यक्तिवाचक संज्ञा अपने गुण या दोषों के अनुसार एक .... जातिवाचक संज्ञा हो जाएगी।

7. लिंग

(क) पुल्लिंग– पुखराज, रोमन, मंगल, सोमवार, नीम; **स्त्रीलिंग**– टोपी, सब्जी, चिल्का

(ख) 1. पुल्लिग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग

(ग) साम्राज्ञी, वीर, बैल, नर गिलहरी, लेखिका, लुहार, गुणवान, मादा मच्छर, गायक, नागिन

(घ) 1. शब्द के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु .... वे लिंग कहलाते है। 2. लिंग दो प्रकार के होते हैं– पुल्लिंग, स्त्रीलिंग। **पुल्लिंग**– वे शब्द जो पुरुष या नर जाति के .... बैल, शेर आदि। **स्त्रीलिंग**– वे शब्द जो स्त्री या मादा जाति के .... औरत, गाय, शेरनी आदि।

8. वचन

(क) 1. एक 2. अनेक

(ख) कलमें, पपीते, भक्तगण, यात्राएँ, ठेले, किताबें, सूचनाएँ, थालियों

(ग) 1. नेता ने भाषण दिया। 2. अध्यापक कक्षा में प्रस्थान करें। 3. मेरे मित्र आए है। 4. गुरूजनों से प्रार्थना है कि वे अपने आसन ग्रहण करें। 5. बहुओं ने श्रृंगार कर लिए हैं।

(घ) 1. शब्द का वह रूप जिससे किसी वस्तु या .... बोध होता है, वचन कहलाता है। 2. एकवचन– शब्द के जिस रूप से केवल एक संख्या का बोध .... गाय, बकरी आदि। बहुवचन– शब्द के जिस रूप से एक से .... गाएँ, बकरियाँ आदि। 3. एकवचन को बहुवचन और बहुवचन को एकवचन में बदलने की प्रक्रिया वचन–परिवर्तन कहलाती है।

9. कारक

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

(ख) 1. की 2. से 3. के, में 4. को, से 5. मैं, पर

(ग) 1. करण कारक 2. करण कारक 3. अपादान कारक 4. करण कारक 5. अपादान कारक

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका .... चिह्न भी कहते है। 2. कारक के भेद– कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन; विभक्ति– ने, को, से (के द्वारा), के लिए, से (अलग करना), (का, की, के/रा, री, रे/ना, नी, ने), (में, पर), हे, अरे आदि। 3. करण कारक में 'स' के द्वारा

कार्य होता है लेकिन अपादान में 'से' से अलग होने का भाव होता है। 4. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से .... मछली पानी में है।

10. सर्वनाम

(क) प्रथम पुरुष– मैं, हम सब; **मध्यम पुरुष–** तुम, तुम लोग; **अन्य पुरुष–** वह, वे

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. वे शब्द जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते है। 2. छः– पुरूषवाचक सर्वनाम, निश्चवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, सम्बन्धवाचक सर्वनाम और निजवाचक सर्वनाम 3. **पुरूषवाचक सर्वनामः** ऐसे सर्वनाम शब्द जो बोलने वाले, सुनने वाले तथा जिसके बारे में .... वह, वे, उसे, उसके, उन्हें आदि। 4. जिन सर्वनाम शब्दों से अपनेपन .... अपनी, आप आदि। 5. जिन सर्वनाम शब्दों से पास या दूर .... जैसे– यह, वह, इन, उस आदि।

11. विशेषण

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ख) 1. बहुत सुन्दर 2. बहुत अच्छी

(ग) गुणबोधक, गंधबोधक, गंधबोधक, स्थानबोधक, दशाबोधक, गुणबोधक, दशाबोधक, गुणबोधक

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम पदों (शब्दों) की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते है। 2. वे शब्द जो विशेषण शब्दों के पूर्व लगकर उसे .... उन्हें हम प्रविशेषण कहते है। 3. चार 4. जिन शब्दों (संज्ञा और सर्वनाम) की विशेषता बतलाई जाती .... जैसे– बाग के फूल सुन्दर है। 5. जो सर्वनाम शब्द किसी संज्ञा शब्द .... हम सार्वनामिक विशेषण कहते है। 6. जो शब्द किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम .... संख्यावाचक विशेषण कहा जाता है। जो शब्द संख्या अथवा सर्वनाम की मात्रा, ... कम, ज्यादा, कुछ आदि। 7. सर्वनाम शब्द संज्ञा के बदले उनके .... सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

12. क्रिया

(क) हथियाना, फिल्माना, टनटनाना, जगमगाना, चिकनाना, थरथराना, मोटाना, बतियाना

(ख) सिलवाना, पढ़वाना, धुलवाना, लिखवाना, बोलवाना

(ग) 1. पढ़कर 2. हँसकर 3. खाकर 4. जाकर

(घ) 1. सकर्मक 2. अकर्मक 3. अकर्मक 4. सकर्मक

(ङ) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, वे शब्द क्रिया कहलाते है। 2. दो 3. संयुक्त क्रिया, नामधातु क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया 4. संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण पदों से बनने वाली क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं। 5. जब दो या दो से अधिक क्रिया .... इसे रंजक क्रिया भी कहा जाता है। 6. जहाँ कर्त्ता स्वयं कार्य न करके .... जैसे– वह धोबी से कपड़े धुलवाता है। 7. पूर्वकालक क्रिया से आशय ऐसे क्रिया से है .... शब्दों में कर लगा होता है; जैसे– सोकर, खाकर, उठकर, जागकर, नहाकर

13. काल

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (स)

(ख) 1. संभाव्य भविष्यत् काल 2. सामान्य भविष्यत् काल 3. सामान्य भूतकाल 4. सामान्य वर्तमान काल 5. संभाव्य भविष्यत् काल

(ग) 1. कुशाल पढ़ रहा था। 2. दर्जी कपड़े सीता था। 3. जानवर दौड़ रहे थे। 4. डॉक्टर ने मरीज को देखा।

(घ) 1. कल सोमवार होगा। 2. मम्मी घर का सारा काम करेगी। 3. अमन क्रिकेट खेलेगा। 4. मामाजी मेरे लिए उपहार लाएँगे।

(ङ) 1. क्रिया का वह रूप जिससे उसके होने .... काल कहलाता है। काल के तीन भेद है- भूत काल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल 2. क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य .... (द) कुत्ते भौंक रहे है। 3. क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय .... (iv) दीप्ती ने पेंटिग बनाई। 4. क्रिया के जिस रूप से उसके .... वंदना ऑफिस जाएगी।

14. वाच्य

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ)

(ख) 1. मैं सहन नहीं करता हूँ। 2. वह जाता है। 3. सुनीता चित्र बनाती है। 4. अपूर्व समाचार पत्र बढ़ता है।

(ग) 1. शेर से दहाड़ा नहीं जाता। 2. लड़की से सोया नहीं जाता। 3. बूढ़े व्यक्ति से चला नहीं जाता। 4. पक्षियों से उड़ा नहीं जाता।

(घ) 1. क्रिया के जिस रूप से यह विदित हो कि .... कर्म अथवा भाव है, वह 'वाच्य' कहलाता है। 2. वाच्य के तीन भेद है- कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य, भाव वाच्य। 3. **कर्तृ वाच्य-** जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता हो .... कर्तृ वाच्य कहते है। जिस वाक्य में 'क्रम' प्रधान होता है .... वह कर्म वाच्य कहलाता है।

15. अव्यय

(क) **समुच्चयबोधक-** अथवा, तथा; **कालवाचक-** सुबह; **परिमाणवाचक-** अधिक; **विस्मयबोधक-** अरे, वाह; **संबंध बोधक अव्यय-** की तरफ, के बिना; **निपात-** तक, भी।

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. तक 2. भी 3. ही 4. मात्र

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. 'अव्यय' शब्दों को अविकारी शब्द भी कहा जाता है। .... कोई परिवर्तन न हो। क्रिया विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक या योजक, विस्मयबोधक, निपात 2. ऐसे शब्द या वर्ण जिनका प्रयोग कथन में .... आपके साथ मैं भी चलूँगा। 3. ऐसे शब्द जो लिंग, वचन, कारक अथवा .... अविकारी शब्द कहा जाता है। 4. जिन शब्दों के द्वारा सुःख, दुःख, विस्मय, ... उसे विस्मयबोधक अव्यय कहते है। 5. वे शब्द जो क्रिया की विशेषता बतलाते हैं .... क्रिया विशेषण अव्यय कहा जाता है। 6. चार

16. उपसर्ग

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) ला, नि, बिला, सु, कु, प्र, पर, अप, उप, उप

(ग) 1. वह ध्वनि या ध्वनि समूह (शब्दांश या शब्द) .... उसे हम उपसर्ग कहते है। 2.

संस्कृत एवं उर्दू 3. उपसर्ग हमेशा स्वतंत्र शब्दों के पूर्व लगकर एक नवीन शब्द का निर्माण करते है।

17. प्रत्यय

(क) सुर + ईला, विज्ञान + इक, दया + आलु, पुष्प + इत, मित्र + ता, गरम + आहट, पर्वत + ईय

(ख) अनु + करण + ईय, बे + रोजगार + ई, अनु + शासन + ईत, उप + योग + इता, ला + परवाह + ई **(ग)** स्वयं कीजिए।

(घ) 1. जो ध्वनि एवं ध्वनि समूह (शब्दांश) किसी .... उसे प्रत्यय कहते है। 2. उपसर्ग की तरह प्रत्यय भी शब्द– .... जैसे लघु + ता = लघुता 3. जो ध्वनि एवं ध्वनि समूह (शब्दांश) किसी .... उसे प्रत्यय कहते है। 4. तीन 5. भाषा भंडार में तथा भाषा की सुंदरता में कमी रहती है। 6. स्वयं कीजिए।

18. समास

(क) विग्रह– सुख और दुख, जीवन भर, सौ वर्षों का समाहार, नव ग्रहों का समूह, नीला है कंठ जिसका महादेव (शिव); **समास का नाम**– द्वंद्व, अव्ययीभाव, द्विगु, द्विगु, बहुब्रहि

(ख) समस्त पद– चंद्रमुखी, जन्मजात, मार्गव्यय, हानि–लाभ, चौराहा; **समास का नाम**– कर्मधारय, अव्ययीभाव, तत्पुरूष, द्वंद्व, द्विगु

(ग) परस्पर सम्बन्ध रखने वाले पदों के मेल को समास कहते हैं। जिस प्रकार .... को लेकर भ्रम रहता है।

(घ) विग्रह– तीन देवों का समूह, तीन देव हैं जिसमें; पीले वस्त्र वाला, पीला का वस्त्र जिसका; महान आत्मा वाला, महान है आत्मा जिसका

(ङ) द्वंवद्व, द्विगु, कर्मधारय, तत्पुरूष, बहुब्रीहि, अव्ययीभाव

(च) 1. परस्पर सम्बन्ध रखने वाले पदों के मेल को समास कहते हैं। 2. छः 3. ऐसे समास (समस्त पद) जहाँ विशेषण तथा .... कर्मधारय समास होता है। जिस समास (समस्त पद) के दोनों पद .... समास होता है। 4. जिस समास (समस्त पद) का प्रथम पद .... का प्रथम पद प्रधान भी होता है। 5. सन्धि में वर्णों के मेल से विकार .... वाले पदों का मेल होता है। 6. जिस समास का पहला पद संख्यावाची हो और .... ही एक भेद मानते है।

19. वाक्य-विचार

(क) 1. विद्यालय प्रतिदिन जाना चाहिए। 2. स्कूल में पढ़ाई और खेल दोनों होते हैं। 3. रमेश एक अच्छा विद्यार्थी है। 4. तुम कल कहाँ गए थे?

(ख) 1. महाकावि कालिदास (उद्देश्य); अभिज्ञान शाकुन्तलम की रचना की थी। (विधेय) 2. पंडित जवाहर लाल नेहरू (उद्देश्य); भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। (विधेय)

(ग) 1. इच्छावाचक 2. विस्मयवाचक 3. प्रश्नवाचक 4. संदेहवाचक

(घ) 1. संयुक्त वाक्य 2. मिश्र वाक्य 3. सरल वाक्य

(ङ) 1. शब्दों का व्यवस्थित समूह जिसमें .....

...... उसे वाक्य कहते है। 2. तीन 3. अर्थ के आधार पर वाक्य लगभग आठ प्रकार के होते है- विधानवाचक वाक्य, विस्मयावाचक या उद्गारवाचक वाक्य, नकारात्मक या निषेधवाचक वाक्य, आज्ञावाचक वाक्य, संकेतवाचक या शर्तवाचक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य 4. वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाये .... इसका विस्तार आता है। वाक्य का वह अंश जिसमें .... उसे विधेय कहते है। 5. निषेधवाचक एवं उद्गारवाचक 6. संयुक्त का तात्पर्य होता है जुड़ा हुआ। .... वाक्यों को संयुक्त वाक्य कहते है। 7. मिश्र वाक्य में एक से अधिक उपवाक्य होते है .... उसने कहा कि कल विद्यालय बन्द रहेगा।

20. विराम चिह्न

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. अ

(ख) 1. विराम चिह्न 2. विस्मयादिबोधक चिह्न 3. निर्देशक चिह्न 4. अद्र्धविराम

(ग) 1. (v) 2. (iv) 3. (ii) 4. (iii) 5. (i)

(घ) 1. भाषा के लिखित रूप में विशेष .... चिह्न विराम-चिह्न कहलाते है। 2. अन्य सभी चिह्नों की अपेक्षा अल्पविराम .... के लिए रूकना होता है। पूर्णविराम और अल्पविराम के मध्य का चिह्न .... सूर्योदय हो गया; पक्षी चहचाने लगे; वायु भी मंद गति से चल पड़ी। 3. उद्धरण-चिह्न दो प्रकार के है। इकहरा उद्धरण-चिह्न, दुहरा उद्धरण-चिह्न। किसी वाक्य में कवि, ... बाल गंगाधार तिलक ने कहा था, ''स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।'' 4. लिखते समय जब वाक्य में कोई .... को लिख दी जाती है।

21. मुहावरे व लोकोक्तियाँ

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

(ख) 1. (iii) 2. (v) 3. (ii) 4. (i) 5. (iv)

(ग) 1. (iv) 2. (i) 3. (v) 4. (ii) 5. (iii)

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) स्वयं कीजिए।

22. पत्र-लेखन

(क) 1. दो 2. प्रार्थना पत्र, आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, नियुक्ति पत्र 3. स्वयं कीजिए। 4. सम्बन्धियों को पत्र (व्यक्तिगत), आमंत्रण पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र 5. स्वयं कीजिए। 6. स्वयं कीजिए।

(ख) स्वयं कीजिए।

23. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

स्वयं कीजिए।

24. संवाद-लेखन

(क) 1. दो या उससे अधिक व्यक्तियों .... देना संवाद-लेखन कहलाता है। 2. संवाद-लेखन एक कला है। फिल्म, दूरदर्शन .... संवाद का ही रूप दिया जाता है। 3. संवाद की भाषा सरल होनी चाहिए। संवादों की वाक्य-रचना यथासंभव छोटी हो। संवाद पात्र एवं परिस्थितियों के अनुकूल हो। संवाद सरल एवं स्वाभाविक होने चाहिए अर्थात् उसमें बनावटीपन का आभास नहीं होना चाहिए। 4. संवाद-लेखन के द्वारा आज अच्छा खासा .... प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है।

(ख) स्वयं कीजिए।

27. प्रतिवेदन-लेखन

(क) 1. किसी घटना या कार्यवाही का संक्षिप्त, तथ्यात्मक एवं .... विवरण प्रतिवेदन कहलाता है। 2. आज का युग मीडिया (जन संचार माध्यम) का युग है .... लेखन प्रतिवेदन लेखन के अन्तर्गत आता है। 3. प्रतिवेदन संक्षेप में लिखा जाए।, प्रतिवेदन तथ्यात्मक तथा स्पष्ट होना चाहिए।, प्रतिवेदन-लेखन में मुख्य बातों को ही सम्मिलित करना चाहिए।, प्रतिवेदन-लेखन में घटना कार्यवाही का उल्लेख क्रमबद्ध होना चाहिए।, प्रतिवेदन की भाषा सरल व स्पष्ट होनी चाहिए। 4. जिससे लोग कम समय में पूरी बात समझ सके।

28. निबन्ध-लेखन

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए। **(ग)** स्वयं कीजिए। **(घ)** स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. किसी निश्चित विषय पर अपने भावों एवं विचारों .... निबन्ध कहलाता है। 2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध को गद्य की कसौटी कहा है। 3. दो 4. चार 5. स्वयं कीजिए।

अनाया व्याकरण-8

1. हिन्दी भाषा: उद्‌भव एवं विकास

1. अपभ्रश भाषा की अन्तिम अवस्था को पुरानी हिन्दी .... हिन्दी भाषा का उद्‌भव हुआ। 2. वैदिक संस्कृत- लौकिक संस्कृत - पलि भाषा- अपभ्रंश भाषा- हिन्दी भाषा। 3. शासन की भाषा .... तेलुगू आदि राज्य भाषाएँ हैं। 4. 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान की .... राजभाषा का दर्जा मिला। 5. शिष्ट समुदाय द्वारा बोली जाने वाली .... भाषा कहा जाता है। 6. जिस भाषा के द्वारा हम एक-दूसरे से सम्पर्क .... भूमिका सम्पर्क भाषा के रूप में है। 7. यह कई उपभाषाओं एवं बोलियों .... में भी जाना जाता है। 8. पश्चिमी हिन्दी 9. पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी, बिहारी हिन्दी, पहाड़ी हिन्दी 10. बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात आदि।

2. भाषा और व्याकरण

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) अंग्रेजी-रोमन, पंजाबी-गुरुमुखी, हिन्दी-देवनागरी, संस्कृत-देवनागरी, उर्दू-खरोष्ठी

(ग) 1. भाषा उच्चारण अवयवों द्वारा उच्चारित .... विचार-विनिमय करता है। 2. लेखन के लिए प्रयोग किए जाने वाले प्रतीकात्मक चिह्नों को 'लिपि' कहा जाता है। 3. तीन 4. मौखिक 5. रोमन एवं देवनागरी

3. वर्ण-विचार

(क) 1. (ब) 2. (स)

(ख) 1. ह्रस्व 2. स्पर्श व्यंजन 3. अंत:स्थ 4. विसर्ग 5. अच् 6. नासिक्य

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 1. ✓

(घ) स्वयं कीजिए।

(ङ) 1. 'वर्ण' वह छोटी मूल ध्वनि है जिसके .... 'अक्षर' भी कहा जाता है। 2. जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य .... इन्हें अच् भी कहते हैं। स्वर को तीन भागों में विभक्त किया गया है- ह्रस्व स्वर, दीर्घ स्वर, प्लुत स्वर। **ह्रस्व स्वर**- जिन वर्णों के उच्चारण में एक .... ये चार ह्रस्व स्वर है। **दीर्घ स्वर**- जिन वर्णों के उच्चारण में दो मात्राओं .... ये सात दीर्घ स्वर हैं। **प्लुत स्वर**- जब ह्रस्व अथवा दीर्घ

स्वरों का .... जैसे- ओ३म्। 3. जो व्यंजन स्वर ध्वनि की सहायता से बोले जाते हैं, उन्हें व्यंजन कहते हैं। 4. जिन वर्णों के उच्चारण में जिह्वा मुख के विभिन्न .... पवर्ग- प, फ, ब, भ, म 5. अल्पप्राण- जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम समय .... अंत:स्थ व्यंजन अल्पप्राण होते हैं। महाप्राण- जिन व्यंजनों के उच्चारण में अधिक समय लगता है, उन्हें .... ऊष्म- श, ष, स, है। 6. **अघोष ध्वनि-** जिन ध्वनियों में उच्चारण में .... ऊष्म- श, ष, स। **सघोष ध्वनि-** जिन ध्वनियों के उच्चारण में .... अतंस्थ- य, र, ल, व।

4. शब्द-विचार

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) टेण्डर-विदेशी, पुलिस-विदेशी, ऑपरेशन-विदेशी, रात्रि-तत्सम, चिड़ियाघर-यौगिक, दूध-तद्भव, पुस्तक-रूढ़, फावड़ा-देशज

(ग) ला + इलाज, पुष्प + इत, लापर + वाह, मोटा + पा, दुकान + दार, कु + मार्ग

(घ) 1. कर्मधारय 2. द्विगु 3. तत्पुरूष 4. द्वंद्व 5. अव्ययीभाव 6. तत्पुरूष

(ङ) 1. वर्णों के संयोग से बने सार्थक ध्वनि समूह को 'शब्द' कहते है। 2. चार 3. **रुढ़ शब्द-** वे शब्द जिनके सार्थक खण्डा नहीं .... रुढ़ शब्द कहा जाता है। 4. **योगरूढ़ शब्द:** जो यौगिक होकर किसी विशेष .... (ज) के जिए प्रसिद्ध हो गए है। 5. **तकनीकी शब्द-** वे शब्द जो ज्ञान-विज्ञान के किसी .... ऑपरेशन -सामान्य- व्यक्ति विश्लेषण या विग्रह के अर्थ में। 6. **विकारी शब्द-** वे शब्द जो वाक्य में प्रयुक्त .... उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। 7. जो ध्वनि या ध्वनि समूह (शब्द या शब्दांश) किसी स्वतन्त्र शब्द .... दृष्टियों से भिन्न होता है। 8. जो ध्वनि या ध्वनि समूह (शब्दांश या शब्द) .... दृष्टियों में भिन्न होता है। 9. समास की प्रक्रिया द्वारा भी नवीन .... गाँव से आया हुआ-ग्रामागत 10. संधि का शब्दिक अर्थ होता है मेल। इनसे भी नये .... विकार वर्णों में उत्पन्न होता है।

5. शब्द-रचना एवं शब्द-भण्डार

(क) अपयश, कृतघ्न, पराजय, अर्वाप्राचीन, अपमान

(ख) माला-पराजय, पुत्र-मणि, जवाब-एक दिशा, लाज-जल **(ग)** स्वयं कीजिए।

(घ) उड़ान, कटाई, लिखावट, चमकाई, सुंदरता

(ङ) धागा-सुत, ईश्वर पर चढ़ाई गई सामग्री-महल, फल-मणा, निश्चित-इच्छा

(च) 1. समान अर्थ रखने वाले शब्दों .... पर्यायवाची शब्द कहते है। 2. जो शब्द किसी शब्द का विपरीत या उलटा अर्थ बताते हो, उन्हें विलोम शब्द कहा जाता है। 3. हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द है जिनका .... अर्थ में पूरी तरह भिन्न है। 4. जिस शब्दों के एक से अधिक अर्थ निकलते है। 5. भाजां से संक्षिप्तता एवं सुंदरता लाने हेतु।

6. संज्ञा

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) 1. जातिवाचक 2. द्रव्य, धातु 3. समूह 4. द्रव्यवाचक, समूहवाचक

(ग) उड़ान, मूर्खता, अ, निकटस्थ,

आवश्यकता, विकलता, हँसाई, चालाकी, मनुष्यता

(घ) 1. किसी वस्तु, स्थान, प्राणी, भाव, गुण, अवस्था या क्रिया के व्यापार के नाम को संज्ञा कहते है। 2. किसी विशेष प्राणी, स्थान या वस्तु के नाम को 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे- व्यक्तियों के नाम- सीता, इंदिरा गांधी, भगत सिंह, मोहन .... साकेत, कामयानी, महाभारत आदि। 3. कभी-कभी कोई जातिवाचक संज्ञा जब जाति का बोध .... व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाती है। जैसे- यह देश गाँधी और नेहरू का है। 4. जिस संज्ञा शब्द से किसी समूह का बोध होता हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते है; जैसे- सभा, कक्षा, समाज, सेना आदि।

7. लिंग

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) गायिका, शिष्य, वधू, नायक, अध्यापिका, मोर, हिरनी, देवर, बेटी, लाला, पत्नी, पापी

(ग) 1. आम का फल मिसरी जैसा मीठा होता है। 2. उसे बहुत आनंद आता है। 3. इसका परिणाम बहुत बुरा है। 4. खेती का काम मुझ से लेने की सोच रहे हो।

(घ) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗

(ङ) पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंग

(च) 1. शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का बोध कारात है। अथ्वा स्त्री जाति का, उसे 'लिंग' कहते है। 2. स्वयं कीजिए। 3. स्वयं कीजिए। 4. स्वयं कीजिए।

8. वचन

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. संज्ञा तथा अन्य विकारी शब्दों के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का बोध हो, उसे 'वचन' कहते है। जैसे- लड़का खा रहा है।, लड़के खा रहे हैं। 2. एकवचन- शब्द के जिस रूप से एक व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का बोध होता है, वह 'एकवचन' कहलाता है। जैसे- चींटी, चिड़िया। बहुवचन- शब्द के जिस रूप से अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध हो, उसे 'बहुवचन' के नाम से जाना जाता है; जैसे- चींटियाँ, चिड़ियाँ। 3. स्वयं कीजिए। 4. स्वयं कीजिए।

9. कारक

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) 1. संबंध 2. अधिकरण 3. अपादान 4. करण 5. कर्म 6. संबोधन 7. अधिकरण

(ग) 1. कर्म 2. संप्रदान 3. कर्म 4. संप्रदान

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका क्रिया तथा वाक्य के दूसरे शब्दों से संबंध का पता चलता है, उसे 'कारक' कहते है। 2. स्वयं कीजिए। 3. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है उसे 'करण कारक' कहते है; जैसे- राम ने रावण को बाण से मारा। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से पृथकता, दूरी, तुलना आदि का बोध होता है, उसे 'अपादान कारक' कहते है; जैसे- वृक्ष से फल गिरा। (पृथक होना)। 4. संज्ञा और सर्वनाम का संबंध क्रिया या दूसरे शब्दों से बतलाने के लिए उनके साथ जो चिह्न लगाए

जाते हैं, उन्हें 'विभक्तियाँ' या 'परसर्ग' कहते है। 1. कर्ता कारक (ने) 2. कर्म कारक (को) 3. करण कारक (से) 4. संप्रदान कारक (के लिए) 5. अपादान कारक (से) 6. संबंध कारक (का, की, के) 7. अधिकरण कारक (में, पे, पर) 8. संबोधन कारक (हे, अरे)

10. सर्वनाम

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) 1. उसकी 2. तुम 3. मैंने 4. किसी को

(ग) 1. यह- निश्चयवाचक 2. तुम्हारा, मुझे- पुरुषवाचक 3. उसका- पुरुषवाचक 4. हम- पुरुषवाचक

(घ) 1. हम अपने घर जा रहे हैं। 2. जिसने यह बात करी है, वह झूठा है। 3. तुम अपने घर जाओ। 4. मुझे आज जाना है।

(ङ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को 'सर्वनाम' कहते है। 2. छः 3. संज्ञा किसी वस्तु के नाम को कहते है जबकि संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है। 4. **उत्तम पुरुष-** जो सर्वनाम वक्ता द्वारा अपने लिए प्रयुक्त होता है, वह 'उत्तम पुरुष' कहलाता है; जैसे- मैं, मेरा, ... हमें आदि। **मध्यम पुरुष-** वक्ता द्वारा जो सर्वनाम श्रोता (सुनने वाले) .... जैसे- तू, तेरा, तुम .... आपका आदि। **अन्य पुरुष-** बोलने या लिखने वाला जिसके बारे में बात करें .... जैसे- वह, वे, उसे, उन्हें, उन्होंने, उसने, वे आदि।

11. विशेषण

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) 1. सामाजिक, पुष्पित, चचेरा, पारिवारिक, शैक्षिक, ग्रामीण, क्रोधी, नागपुरी, नमकीन, सुगंधित, भौगोलिक, जिसे, ऐतिहासिक, ईर्ष्यालु, कुलीन, श्रद्धालु, उसे, पंजाबी

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. जान-गुणवाचक 2. उसे-संकेतवाचक 3. तीन- संख्यावाचक 4. थोड़ा-परिमाणवाचक 5. पचास मील- संख्यावाचक

(ङ) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताएँ, उसे 'विशेषण' कहते है। 2. **गुणवाचक विशेषण-** जिन विशेषण शब्दों से .... कड़वा (स्वाद); लाल, हरा (रंग) आदि। **संकेतवाचक विशेषण-** जो विशेषण शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की .... ये दोनों शब्द संकेतवाचक विशेषण हैं। **परिमाणवाचक विशेषण-** जिन शब्दों से किसी वस्तु की मात्रा .... विशेषण के दो भेद होते हैं। **संख्यावाचक विशेषण-** जो विशेषण शब्द संज्ञा या .... विशेषण के भी दो भेद होते हैं। निश्चत संख्यावाचक विशेषण- जो विशेषण शब्द संज्ञा .... कल पोलियो की दवा थोड़े ही बच्चों ने पी। 3. विशेषण शब्द जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताते हैं, उन्हें 'विशेष्य' कहते है। 4. स्वयं कीजिए।

12. क्रिया

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) सठियाना, अपनाना, चकराना, शर्माना, टकराना, फिल्माना, खनखनाना, हथियाना, मिनमियाना, बतियाना, लजाना, खरीदना

(ग) 1. प्रदान करता है। 2. है। 3. कार्य किया था। 4. फुटबॉल खेलेंगे। 5. पानी देता है। 6.

खटखटा रहा है। 7. जा रहे हैं। 8. पढ़ाया। 9. पानी भरवाती है।

13. काल

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) 1. संभाव्य भविष्यत् 2. सामान्य भविष्यत् 3. सामान्य भविष्यत् 4. सामान्य भविष्यत् 5. सामान्य भूत 6. पूर्ण भूत

(ग) 1. दादीजी गीता पढ़ रही थी। 2. छात्र लिख रहे थें। 3. शायद वह दूध पीता था। 4. हम जयपुर गये थे। 5. संध्या के समय आकाश साफ था।

(घ)

सामान्य भूत	सामान्य वर्तमान	सामान्य भविष्यत्
मैं भागा।	मैं भागता हूँ।	मैं भागूँगा।
मैं चला।	मैं चलता हूँ।	मैं चलूँगा।
मैं पढ़ा।	मैं पढ़ता हूँ।	मैं पढ़ूँगा।
मैं उठा।	मैं उठता हूँ।	मैं उठूँगा।
मैं बोला।	मैं बोलता हूँ।	मैं बोलूँगा।

14. वाच्य

(क) 1. सीता पढ़ती है। 2. उसके द्वारा पत्र लिखा जाता है। 3. लड़के से दौड़ा जाता है। 4. मुझसे चला नहीं जा सकता। 5. लड़के पुस्तक पढ़ते है।

(ख) 1. कर्म वाच्य 2. कर्तृ वाच्य 3. कर्म वाच्य 4. भाव वाच्य 5. कर्म वाच्य

(ग) कर्तृ वाच्य, कर्म वाच्य, भाव वाच्य

(घ) 1. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है। क्रिया का मुख्य विषय कर्त्ता है, कर्म है अथवा भाव है उसे वाच्य कहते है। 2. तीन 3. **कर्तृ वाच्य-** जिस वाक्य की क्रिया कर्त्ता .... उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं; जैसे- (क) लड़का पुस्तक पढ़ता है। (ख) लड़की पुस्तक पढ़ती है। **कर्म वाच्य-** जिस वाक्य की क्रिया कर्म के लिंग .... तो वहाँ कर्मवाच्य होता है; जैसे- लड़के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। 4. **कर्तृ वाच्य-** जिस वाक्य की क्रिया कर्त्ता .... उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं; जैसे- (क) लड़का पुस्तक पढ़ता है। (ख) लड़की पुस्तक पढ़ती है। 5. भाव वाच्य की क्रिया सदैव अकर्मक, पुल्लिंग, एकवचन में होती है। .... भाव भी व्यक्त होता है; जैसे- मुझसे चला नहीं जाता।, बच्चों से दौड़ा नहीं जाता।

15. अव्यय

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) 1. पीछे 2. के सहारे 3. के समीप 4. के पास

(ग) 1. फड़फड़ाते- स्थितिवाचक 2. जोर-जोर- विधिवाचक 3. तेज- रीतिवाचक 4. जल्दी- स्थितिवाचक 5. जैसा, वैसा- हेतुवाचक

(घ) 1. अव्यय वे शब्द है, जिनमें लिंग, वचन, पुरुष, एवं काल आदि की दृष्टि से काई रूप परिवर्तन नहीं होता। 2. क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द 'क्रिया विशेषण' कहलाते हैं; जैसे- राहुल धीर-धीरे चल रहा है। 3. **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण-** क्रिया के होने के स्थान का बोध कराने .... जैसे- अंदर जाकर बैठो। इधर-उधर क्या देख रहे हो? **रीतिवाचक क्रिया-विशेषण-** जो क्रिया-विशेषण क्रिया के होने की रीति का बोध कराते हैं, ... जैसे- वह जोर-जोर से हँस रहा था।

अचानक मोहित साइकिल से गिर पड़ा। 4. विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाता है जबकि क्रिया विशेषण क्रिया की विशेषता बतलाता है। 5. वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं 'संबंधबोधक' अव्यय कहलाते हैं; जैसे- इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई चारा नहीं है।

16. वाक्य-विचार

(क) 1. शब्दों का सार्थक एवं व्यवस्थित समूह जो किसी विचार को पूर्णता एवं स्पष्टता के साथ प्रकट करे, वाक्य कहलाता हैं; जैसे- वह घर जाता है। 2. वाक्य में अर्थ की .... को पद क्रम कहते हैं। 3. हिन्दी वाक्य रचना में पदों का एक निश्चित .... मोहन पत्र लिखता है। 4. वाक्य के दो भाग होते हैं जिन्हे हम क्रमशः उद्देश्य और विधेय कहते है। 5. आठ 6. विस्मयादिवाचक या उद्गारवाचक वाक्य- जिन वाक्यों से हर्ष, शोक, विस्मय आदि .... विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं। 7. रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार- सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य। 8. वाक्यों को मिलाना एवं उसका वर्णन करना। 9. संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य, क्रिया विशेषण उपवाक्य 10. चार

17. विराम-चिह्न

(क) 1. (अ) 2. (अ)

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. अरे! शीला कब गई? जब मैं मिला था, वह कुछ नहीं बोली। 2. जो संतोषी होते हैं, वे सदा सुखी रहते है। 3. मैंने डॉ शर्मा का निबंध पढ़ा- 'सांप्रदायिकता एक कोढ़'। 4. जो पत्र आज आया है, कहाँ है? 5. जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब ईश्वरीय शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। 6. गांधी जी ने कहा- ''करो या मरो।'' 7. बेटा, बड़ों का आदर करो, सत्य बोलो, पढ़ाई में मन लगाओ।

(घ) 1. भाषा के लिखित रूप में रुकने अथवा विराम देने के लिए जिन संकेत-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।, उन्हें 'विराम-चिह्न' कहा जाता है। 2. बारह

19. अलंकार

(क) 1. शब्द 2. यमक 3. अनुप्रास 4. रूपक 5. रूपक

(ख) 1. श्लेष 2. यमक 3. रूपक 4. अतिशयोक्ति 5. मानवीकरण

(ग) 1. जिसके प्रयोग से साहित्य के शब्दों और अर्थो में .... उसे अलंकार कहते है। 2. जिनके प्रयोग से साहित्य के शब्दों में सौन्दर्य .... शब्दालंकार कहते हैं। 3. श्लेष अलंकार- 'श्लेष अलंकृत अर्थ बहु एक शब्द में होए' .... बार-बार बन्द कर देते हैं। 4. जिनके प्रयोग से साहित्य के अर्थों में चमत्कार या सौन्दर्य उत्पन्न हो जाय उसे अर्थालंकार कहते हैं। 5. यमक अलंकार- जहाँ एक की शब्द की आवृति बार-बार हो .... जैसे- काली घटा का घमण्ड घटा। श्लेष अलंकार- 'श्लेष अलंकृत अर्थ बहु एक शब्द में होए' .... बार-बार बन्द कर देते हैं। 6. जिनके प्रयोग से साहित्य के अर्थों में चमत्कार या सौन्दर्य उत्पन्न हो जाय उसे अर्थालंकार कहते हैं। 7. मानवीकरण अंलकार-

जहाँ प्रकृति के किसी भी पक्ष ...... मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे- नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहि विकास यहि काल अली कली की क्यों बँधे, आगे कौन हवाल। 8. रूपक अलंकार- जहाँ अत्यधिक सादृश्यता .... (ख) मैया मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहों। 9. उत्प्रेक्षा अलंकार के भी वाचक शब्दों- मानों, जानो, मनहु, जनहु, का उल्लेख होता है। 10. अतिशयोक्ति अलंकार- जहाँ वास्तविकता से परे किसी वस्तु का बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन किया . ... अलंकार होता है; जैसे- हनुमान की पूँछ में लग न पायी आग, सारी लंका जल गयी, गए निशाचर भाग।

20. पत्र-लेखन

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. पत्र-लेखन एक कला है। पत्र के द्वारा हम .... द्वारा ही निष्पादित होते हैं। 2. व्यक्तिगत जीवन में पत्रों की .... का आदान-प्रदान करते हैं। 3. दो 4. सरकारी तंत्र में सारा कार्य पत्रों के आदान-प्रदान .... जुड़ा महसूस करते हैं। 5. पत्र-लेखन की विशेषताएँ - सरलता, संक्षिप्तता, स्पष्टता, शिष्टता, मौलिकता, सटीक 6. यहाँ हम औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्रों सामान्य भागों (अंगों) का उल्लेख करना उचित समझते हैं। 1. सम्बोधन (पाने वाले का नाम/पद एवं पता) 2. विषय का उल्लेख (अनौपचारिक पत्रों के लिए) .... 9. संलग्नक (यदि कोई नहीं)। 7. औपचारिक पत्र के भेद- सामान्य पत्र (व्यक्तिगत), निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, शोक पत्र

21. संचार माध्यम

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) स्वयं कीजिए। **(घ)** स्वयं कीजिए।

(ङ) फैक्स के द्वारा लिखित सूचना एक .... प्रेषण दूसरे स्थान पर किया जाता है।

(च) 1. ये सूचना से प्रेषण के माध्यम होते हैं 2. मुख्य रूप से हम संचार माध्यमों को दो भागों में बाँटते हैं- प्रिण्ट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया 3. प्रिण्ट मीडिया से आशय ऐसे माध्यम से है जो हमारे समक्ष प्रकाशित होकर आते है; जैसे- समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ 4. इलेक्ट्रानिक मीडिया के अन्तर्गत कई माध्यम हैं। संक्षेप में उनका विवरण निम्नवत् हैं- रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, टेलीफोन, फैक्स, इण्टरनेट 5. फैक्स के द्वारा लिखित सूचना एक .... प्रेषण दूसरे स्थान पर किया जाता है। 6. इण्टरनेट को हिन्दी में अन्तरजाल भी कहा जाता है। यह .... चाहे उनका आदान-प्रदान कर सकते हैं।

22. प्रतिवेदन-लेखन

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. 'रिपोर्ट' शब्द अंग्रेजी से हिन्दी भाषा में आया है .... अथवा रिपोर्ट-लेखन कहते हैं। 2. संक्षिप्ता, तथ्यपरकता (सत्यता), क्रमबद्धता, रोचकता 3. (1) प्रतिवेदन संक्षिप्त होना चाहिए। (2) प्रतिवेदन-लेखन में घटना या कार्यवाही की मुख्य-मुख्य बातों का उल्लेख होना चाहिए। (3) प्रतिवेदन तथ्यपरक और स्पष्ट होना चाहिए। (4) प्रतिवेदन क्रमबद्ध लिखा जाना चाहिए। 4. किसी घटना, कार्यवाही, बैठक अथवा .... तैयार करना प्रतिवेदन कहलाता है।

23. संवाद-लेखन

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. संवाद-लेखन दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाली बातचीत एवं नोक-झोंक का स्वाभविक रूप से लेखन है। इस प्रकार संवाद-लेखन एक कला है। 2. 'संवाद-लेखन' एक कला है। आज यह कला काफी विकसित हो चुकी है .... संवाद-लेखन के ही परिणाम है। 3. नाटक, फिल्म और धारावाहिक की लोकप्रियता का एक मुख्य कारण उसका संवाद होता है। 4. संवादों को प्रभावशाली बनाने के लिए सही शब्दों के चयन के साथ-साथ उसमें उतार-चढ़ाव भी लाया जाता है। 5. कहानी तथा उपन्यास के विविध पात्र भी आपस में बातचीत करते हैं एवं इस प्रकार कहानी आगे बढ़ती है। 6. आजकल संवाद-लेखन धन के उपार्जन का अच्छा माध्यम बन .... के रूप में लिखा जाता है।

24. डायरी-लेखन

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) 1. वे घटनाएँ अथवा बातें जिनका जीवन पर प्रभाव पड़ता है उसकी स्मृति के लिए लेखन 'डायरी' कहलाता है। 2. डायरी-लेखन में ऐसी घटनाओं अथवा महत्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया जाता है। जिसका जीवन पर काफी प्रभाव पड़ता है। 3. ऐन फ्रैंक की डायरी 4. 13 वर्ष में 5. इसमें यहूदियों पर हुए नाजियों के अत्याचारों को लिपिबद्ध किया गया है। 6. (क) डायरी-लेखन का विवरण संक्षिप्त होना चाहिए। (ख) डायरी लिखते समय तिथि, सन् एवं स्थान का उल्लेख होना चाहिए। (ग) डायरी-लेखन में सच्चाइयों का उल्लेख होना चाहिए। (घ) डायरी में नवीन सूचना अथवा जानकारी को महत्व देना चाहिए।

25. अपठित पद्यांश और गद्यांश

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) 1. अपठित से आशय- जो पहले पढ़ा नहीं गया हो। 2. अपठित गद्यांश से जहाँ छात्रों की समझ एवं विचारों का मूल्यांकन किया जाता है। 3. काव्यांशों से छात्रों की कल्पना एवं भावनात्मक शक्ति का आकलन किया जाता है। 4. अपठित प्रश्नों का उत्तर लिखते समय विद्यार्थी में निम्नलिखित गुण या योग्यताएँ होनी चाहिए। एकाग्रता का गुण, व्यावहारिक भाषा का ज्ञान, विश्लेषण अथवा विवेचन की क्षमता, अभिव्यक्ति की क्षमता

26. कहानी-लेखन

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** स्वयं कीजिए।

(ग) 1. कहानी सबसे लोकप्रिय गद्य विधा इसलिए है कि इसे सुनने में बड़ा आनंद आता है। 2. स्वयं कीजिए। 3. आज जिन कहानियों पर फिल्में एवं टी.वी. धारावाहिक बनते हैं उनके कथाकारों को अच्छे पैसे मिलते हैं। अत: कहानी-लेखन एक अच्छा करियर भी बन चुका है। 4. हिन्दी साहित्य की कहानियों का मूल स्रोत 'पंचतंत्र' एवं- हितोपदेश नामक प्राचीन ग्रंथ हैं। 5. जन संचार क्रांति के वर्तमान युग में कहानियों का महत्व और भी बढ़ गया है। .... समाज में काफी प्रतिष्ठा है।

27. निबन्ध-लेखन

(क) स्वयं कीजिए। **(ख)** 1. किसी विषय पर अपने भावों एवं विचारों को क्रमबद्ध करके

लिखना, निबन्ध कहलाता है। 2. निबन्ध के द्वारा किसी भी विषय में छात्र की समझ, उसकी कल्पना शक्ति, उसके तर्क अथवा विश्लेषण की शक्ति के साथ-साथ, उसकी भाषा एवं अभिव्यक्ति की क्षमता का भी आकलन किया जाता है। 3. दो 4. विषय प्रधान निबन्ध, ललित निबन्ध (व्यक्ति व्यंजक निबन्ध) 5. प्रस्तावना (भूमिका), विषय-प्रतिपादन, उपसंहार 6. (क) निबन्ध सरस और सहज होना चाहिए। (ख) निबन्ध में भाव एवं विचार का सही सन्तुलन होना चाहिए। (ग) निबन्ध में विषय का विस्तार क्रमिक होना चाहिए। (घ) निबन्ध का अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए। (ङ) निबन्ध विषय से सम्बन्धित होना चाहिए। (च) अपने तर्कों की पुष्टि के लिए उद्धरण एवं उदाहरण आदि का समावेश होना चाहिए।